ORIGINAL RESEARCH PAPER

Commerce

फूलों की खेती से किसानों को फायदा :–एक अनुसंधान

KEY WORDS:

सतीश कुमार पासवान शोधार्थी, वाणिज्य एवं व्यवसाय प्रशासन विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

भूमिका

फूलों की खेती और व्यवसाय अन्य फसलों के तुलना में काफी लाभप्रद है। बिहार में पुष्प की खेती दशकों से चलती आ रही है, किन्तु व्यवसाय के रूप में पुष्प कृर्षि राज्य में पिछले कुछ वर्षों से विकसित हो सकी है। विविध जलवायु वाला यह प्रदेश बिहार में सभी प्रकार के पुष्प उत्पादन के अनुरूप है और सकल घरेलु उत्पादन में पुष्प व्यवसाय का योगदान राज्य में बढ़ता जा रहा है। पिछले अध्याय में भारत में पुष्प व्यवसाय की मौजुदा स्थिति के विषय में विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में बिहार में पुष्प व्यवसाय की वर्तमान दशा एवं संभावनाओं पर प्रकाश डाला गया है। बिहार में पुष्प कृर्षि व्यवसाय तेजी से बढ़ रहा है। राज्य सरकार का प्रयास भी इस दिशा में सराहनीय है, परन्तु आज भी पुष्प व्यवसाय अन्य राज्यों के तुलना में विशेष प्रभावशाली नहीं रहा। अर्थव्यवस्था सुदृढ़ करने तथा रोजगार मुहैया कराने में पुष्प व्यवसाय महती योगदान मुहैया करा सकता है।

सुन्दरता में बेजोड़ खूबसूरत फूल आदिकाल से ही मानव जीवन का हिस्सा बने हुए हैं। हरियाली एवं फूलों की अनुपम छटा, उसके सौन्दर्य को देखकर प्रत्येक का मन चहक उठता है और हर पल क्षण इन्हीं के सामीप्य में व्यतीत करने का मन करता है ताकि इनकी सुगंध एवं सौन्दर्य का भरपूर आनन्द लिया जा सके।

एक समय था जब लोगों के पास बड़े–बड़े उद्यान, ऊँचे–ऊँचे पेड़ चारों तरफ हरियाली से आच्छादित आवास हुआ करते थे। आज अधिकतर लोग फैल्टों में रहते हैं जिनके पास दो या तीन कमरे ही होते हैं।

बिहार में इस समय फूलों की मांग बढ़ रही ही। पटना, गया, भागलपुर, नालंदा जैसे बड़े शहरों के आसपास फूलों की खेती भी शुरू की गई है। किसान विभिन्न फूलों जैसे–गेंदा, जरबेरा, ग्लैडियोलि कारनेश, गुलाब इत्यादि पौधे लगाने लगे हैं। फिर भी इनकी खेती अपेक्षाकृत से काफी कम है। अतः आवश्यकता है कि इन किसानों को फूलों के खेती से संबंधित जानकारी दी जाए।

फूलों की खेती से किसानों को क्या फायदे हैं?

फूलों की खेती अन्य फसलों के अपेक्षा काफी लाभदायक है। अन्य फसलों की अपेक्षा इनकी खेती में शुरूआत में लागत अधिक आती है। पर दुसरे से इसमें कमी हो जाती है, जिससे किसान को दूसरे साल से फायदा अधिक हो जाता है।

बहुत से पौधे एक बार लगने के बाद कई सालों तक फूल देते रहते हैं, जैसे–एक बार गुलाब लगाने के बाद दस सालों तक फूल मिलते रहते हैं वहीं बहुत से फूल हर साल लगाये जाते हैं जैसे–गेंदा, जरबेरा, ग्लैडियोली, कारनेशन, चन्द्र मिल्लिका आदि।

इनकी खपत पटना जैसे शहरों में करीब चार से पाँच लाख रूपये प्रतिदिन है। अन्य शहरों में भी इनकी खपत बढ़ती जा रही है। साथ ही अच्छे ढंग से उगाने पर देश के अन्य हिस्सों या देश से बाहर निर्यात भी किया जा सकता है।

वर्तमान दशा

बिहार में फूलों की खेती वर्षों से की जा रही है, परन्तु व्यवसाय के रूप में पुष्प कृषि हाल के वर्षों में विकसित हुई है। विविध जलवायु वाला यह प्रदेश बिहार, सभी प्रकार के फूलों के उत्पादन के अनुरूप है। गुलाब, गेंदा, कार्नेशन, बेला, सुरजमुखी आदि का उत्पादन घर तथा अन्य स्थलों के सुन्दरता बढ़ाने हेतु किया जाता है। बिहार में करीब 105 हेक्टेयर के क्षेत्रफल में फूलों की खेती होती है और लगभग 9500 टन (2019) फूल का उत्पादन होता है। बिहार में फूल के उत्पादन में प्रभावशाली वृद्धि दर्ज कि गई है, परन्तु अभी भी यहाँ उत्पादन की दर अन्य राज्यों के तुलना में काफी कम है।

बिहार के 50 प्रतिशत से अधिक कार्यवल को कृर्षि रोजगार उपलब्ध कराता है। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में इसका महती योगदान रहा है। यह कच्ची सामग्री का महत्वपूर्ण स्त्रोत है तथा अनेक औद्योगिक उत्पादों विशेषतः उर्वरक, कीटनाशक, कृषि औजार तथा अनेक प्रकार की उपभोक्ता वस्तुओं के लिए इसकी भारी मांग है। बिहार राज्य में गेंदा और गुलाब के फूल के व्यवसाय की अपार संभावनाएं है।

बिहार में पुष्प कृर्षि और पुष्प व्यवसाय तेजी से बढ़ रहा है। पुष्प कृषि का तीव्र वृद्धि न केवल आत्म निर्भरता के लिए आवश्यकता है बल्कि लोगों की खाद्य तथा पौषणिक सुरक्षा को पुरा करने राज्य में आय तथा सम्पत्ति का साम्यापूर्ण वितरण करने तथा साथ ही गरीबी को कम करने तथा जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए भी यह आवश्यक है। कृषि में संवृद्धि का अन्य क्षेत्रों पर अधिकतम विस्तृत प्रभाव पड़ता है जिससे संपूर्ण अर्थव्यवस्था में तथा जनसंख्या से सर्वाधिक खंड में लाभों का विस्तार होता है।

राज्य सरकार की नीतियाँ

कृषि मंत्रालय के अंतर्गत कृषि एवं सहकारिता विभाग कृषि क्षेत्र के विकास के लिए उत्तरदायी नोडल संगठन है। यह देश के भूमि, जल, मृदा तथा पौध संसाधनों के इष्टतम उपयोग के जरिए तीव्र कृषि संबंधी संवृद्धि हासिल करने की ओर लक्षित नीतियों तथा कार्यक्रमों के निरूपण तथा क्रियान्वयन के लिए उत्तरदायी है।

कृषि के राज्य विषय होने के कारण यह बिहार सरकारों का उत्तरादायित्व है कि वे अपने संबंधित राज्य के भीतर पुष्प व्यवसाय की संवृद्धि तथा विकास का सुनिश्चय करें। तदनुसार, अनेक राज्यों में पृथकों विभाग स्थापित किए गए है।

प्रति हेक्टेयर उत्पादकता बिहार में सर्वोच्च (17.05 मिलियन टन) है जिसके पश्चात हरियाण (11.55 मिलियन टन) का स्थान है। दूसरी ओर, फूलों की उत्पादकता राजस्थान में सबसे कम (0.59 मिलियन टन) है। पुष्प कृषि फसलों के अंतर्गत लगभग 77 प्रतिशत क्षेत्रफल सात राज्यों में केन्द्रित है जो तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली हैं। आठवीं योजनावधि के दौरान 615 मिलियन फूलों का उत्पादन हासिल करने के लिए इन योजना अवधियों में कटे फूलों के उत्पादन में वृद्धि हुई।

बाजार

बिहार में पुष्प कृषि तेजी से उभरते हुए एक उद्योग के रूप में अपनी पहचान बना रही है। किसानों की आय में पुष्पोंत्पादन की भूमिका बहुत तेजी से बढ़ रही है। जिसके देखते हुए राज्य में फूलों की खेती को बढ़ावा देने के लिए कृषि अनुसंधान संस्थान के पुष्पोत्पादन अनुसंधान निदेशालय, काम कर रहा है।

हालाँकि पहले साल फूलों के बीज खरीदने के लिए खर्च तो करना पड़ेगा, लेकिन अगले वर्ष बीजों को खरीदने का खर्च बच जाएगा। क्योंकि फूल खिलने के बाद उन्हीं से बीज प्राप्त किया जा सकता है। अगर बात की जाए बाजार की तो पटना बोध गया की बाजार में इन फूलों की माँग बनी रहती है और शादी के सीजन में तो यह बहुत ज्यादा मात्रा में प्रयोग किया जाता है। जिससे बाजार में इसकी माँग बढ़ जाती है और किसान को काफी लाभ मिलता है। फूलों की खेती के लिए किसान को इनकी खेती की जानकारी होना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि खेती की किस्म, रखरखाव और बीमारियों के बारे में किसान को यदि जानकारी नहीं होती है तो वह नुकसान झेल सकते हैं। राज्य में कृषि संस्थानों के द्वारा बाजार में बिकने वाले फूलों की खेती की पूरी जानकारी उपलब्ध कराई जा रही, ताकि किसान इनकी खेती करके अच्छी कमाई हो सके।

बिहार में पुष्प कृषि और इससे सम्बन्धित व्यवसाओं की हालत में सुधार हेतु निम्नलिखित मुख्य बातों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए ताकि इनसे भरपूर आय हो सके।

1. पुष्प कृषकों की आय में बढ़ोत्तरी हो।
2. कृषि जोखिम में कमी हो।
3. रोजगार के अवसर बढ़े।
4. पुष्प उत्पाद का निर्यात बढ़े।
5. जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो।
6. पुष्प कृषि का बुनियादी ढ़ाँचा विकसित हो।

बिहार में पुष्प व्यवसाय की संभावनाएं

बिहार के फूल उद्योग में गुलाब, रजनीगंधा, ग्लेड्स, एंथुरियम, कार्नेशन, गेंदा आदि फूल शामिल है। फूलों की खेती बिहार में पाली और ग्रीनहाउस दोनों में की जाने लगी है। व्यावहारिक विविधीकरण की दृष्टि से पुष्पों की खेती का महत्व दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है। यद्यपि पुष्पों को उगाने की कला बिहार के लिए नई नहीं है तथापि, बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक स्तर पर इनकी खेती तथा पॉली हाउसों में इनकी संरक्षित बिहार में अपेक्षाकृत नयी है। विपुल आनुवंशिक विविधता, विभिन्न प्रकार की कृषि जलवायु संबंधी परिस्थितियों बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न मानव संसाधन के कारण बिहार में इस क्षेत्र में विविधीकरण के नए मार्ग प्रशस्त हैं जिनका अभी तक पर्याप्त रूप से दोहन नहीं हुआ है। विश्व व्यापार संगठन के युग में विश्व बाजार के खुल जाने के कारण पुष्पों तथा पुष्पोत्पादों का विश्व भर में स्वतंत्र रूप से आवागमन संभव है। इस संदर्भ में प्रत्येक देश को प्रत्येक देश की सीमा में व्यापार करने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हैं।

संदर्भः

1. सेन गुप्ता एण्ड कमल (2009) फ्लोरी कल्चर मार्केटिंग इन इण्डिया, एक्सेल बुक्स, नई दिल्ली पृष्ठ सं० 244–252
2. जिन्दल, एस, के – (2010) पुष्प कृषि, केन्द्रीय अनुसंधान प्रेस, जोधपुर पृ० 213–216
3. ूएंचमकंण्हवअण्पद
4. इंडियन हॉर्टिकल्चर डेटावेस (2014), नेशनल हॉर्टिकल्चर बोर्ड, मिनिस्टरी ऑफ एग्रिकल्चर, गॉवरमेंट ऑफ इंडिया
5. तिवारी, ए०, (2011) पुष्पोत्पादनः विकास की असीम संभावनाएं योजनाः 40, अंक – 1 अप्रैल
6. ूएसिवतपबनसजनतमण्पद
7. पुरोहित हरीश (1998), फ्लोरीकल्चर इन इंडियन कल्चर, सुमेघा पब्लिकेशन, रायपुर पृष्ठ – 110–116
8. राव, के० आर० (2008), फ्लोरीकल्चर वूम इन इंडिया, क्रोनिका हॉर्टिकल्चर, ए० पब्लिकेशन ऑफ द इंटरनेशनल सोसाईटी फोर हॉर्टिकल्चर साईसं, 40,2
9. फ्लोरीकल्चर मार्केट इन इण्डिया (2010) – नेट (इण्डिया) प्रा० लि०।
10. बनर्जी दिपंकर, (2013), फ्लोरीकल्चर मार्केट इन इण्डिया, स्नेहा प्रिंटिगस, उनैन पृ० – 207–211
11. इंडियन हॉर्टिकल्चर डेटावेस (2014), नेशनल हॉर्टिकल्चर बोर्ड, मिनिस्टरी ऑफ एग्रिकल्चर, गॉवरमेंट ऑफ इंडिया
12. जिन्दल, एस, के – (2010) पुष्प कृषि, केन्द्रीय अनुसंधान प्रेस, जोधपुर पृ० 213–216
13. राय, पी०, के, (2012) पुष्प कृषि, केन्द्रीय अनुसंधान प्रेस, जोधपुर पृ० 213.216